गरीबी
(Poverty)

- गरीबी उन वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति का अभाव है जो व्यक्ति तथा उसके परिवार के स्वास्थ्य और कुशलता को बनाये रखने में आवश्यक है।

  गरीबी में पाँच मूलभूत चीजों में से एक या एक से अधिक की कमी से हो जाती है–

  (i) भोजन
  (ii) वस्त्र
  (iii) आवास
  (iv) शिक्षा
  (v) चिकित्सा।

➢ वर्ल्ड डेवलपमेंट रिपोर्ट के अनुसार

- गरीबी निम्नतम जीवन-यापन स्तर करने की असमर्थता है, यानी जब निम्नतम जीवन-यापन स्तर भी प्राप्त नहीं किया जा सके।

➢ विश्व बैंक के अनुसार

- वह व्यक्ति जिसकी प्रतिदिन की आय 2 अमेरिकी डॉलर से कम है, वह गरीब है।

➢ वी.एम. और एन. रथ फार्मूला (1971)

- ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में प्रतिदिन 2400 कैलोरी प्राप्त करने के लिए आवश्यक धनराशि।

➢ सुरेश तेंदुलकर समिति (2009)

- इसमें कैलोरी के स्थान पर प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय को आधार बनाया गया।
- शहरी क्षेत्र में 1000 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह (33 रुपये प्रति दिन) और ग्रामीण क्षेत्र के लिये 816 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह (27 रुपये प्रति दिन) से कम खर्च करने वाले लोग गरीब हैं।

➢ सी. रंगराजन समिति (2012)

- शहरी क्षेत्र में 1407 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह (47 रुपये प्रति दिन) और ग्रामीण क्षेत्र के लिये 972 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह (32 रुपये प्रति दिन) से कम खर्च करने वाले लोग गरीब हैं।

➢ National Statistical Office (NSO)

- 2019 में NSSO और CSO के विलय से राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (National Statistical Office- NSO) का गठन हुआ। 2019 से पहले भारत में गरीबी का अनुमान NSSO द्वारा किया जाता था। जिसकी स्थापना 1950 में हुआ था, जो केन्द्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय के अधीन था।

केन्द्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय
↓
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (NSO)
↓
नीति आयोग

Data Collection Methods

Data Collection Methods
↓

- **Unifrom Resource Period (URP)**
  1993-94 तक गरीबी का निर्धारण URP के आधार पर किया जाता था। लोगों से उनके 30 दिनों के उपभोग के बारे में पूछा जाता था।
- **Mixed Resource Period (MRP)**
  1999-2000 से NSSO (वर्तमान में NSO) ने मिश्रित संदर्भ (MRP) Method को अपनाया। इनमें पिछले एक साल में लोगों द्वारा कार्य किये गये व्यय के बारे में पूछा गया।

गरीबी के प्रकार

- **निरपेक्ष गरीबी (Absolute Poverty)**
  निरपेक्ष गरीबी से अर्थ उस न्यूनतम से है जिसकी एक परिवार के लिए आधारभूत न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यकता होती है तथा जिसे वह परिवार जुटा पाने में असमर्थ होता है।
  भारत में गरीबी मापन में इसी विधि का प्रयोग किया जाता है।
- **सापेक्ष गरीबी (Relative Poverty)**
  आय की असमानताओं के आधार पर परिभाषित, इस संबंध में विभिन्न वर्गों या देशों के निर्वाह स्तर पर या प्रति व्यक्ति आय की तुलना करके गरीबी का पता लगाया जाता है।

सापेक्ष गरीबी मापन की विधियाँ

- लॉरेंज वक्र विधि
- गिनी गुणांक

लॉरेंज वक्र विधि

- ☞ 1905 में मैक्स ओ. लॉरेंज ने विकसित किया था।
- ☞ इस विधि द्वारा किसी देश के लोगों के बीच आय की विषमता को ज्ञात करते हैं।
- ☞ इस वक्र का प्रत्येक बिन्दु उन व्यक्तियों को प्रदर्शित करता है जो एक निश्चित आय के स्तर के नीचे जीवन व्यतीत कर रहे होते हैं।

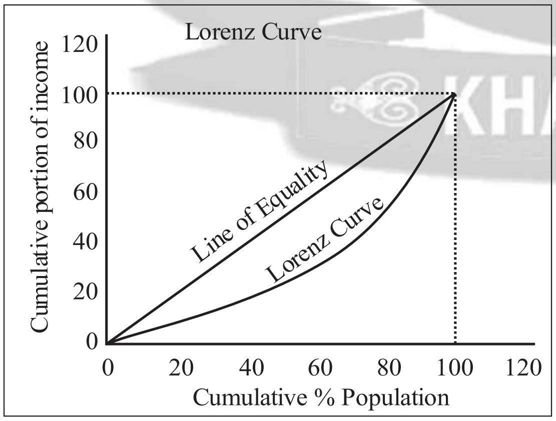

गिनी गुणांक

- ☞ 1912 में इटैलियन सांख्यिकीविद् कोराडो गिनी द्वारा विकसित किया था।
- ☞ यह आय में वितरण की विषमता को मापने की सबसे प्रचलित विधि है।
- ☞ आय के प्रत्येक युग्म के बीच आय अंतर की माप करता है।

$$\text{गिनी गुणांक} = \frac{\text{छायांकित क्षेत्रफल}}{\text{समता रेखा के नीचे का सम्पूर्ण क्षेत्रफल}}$$

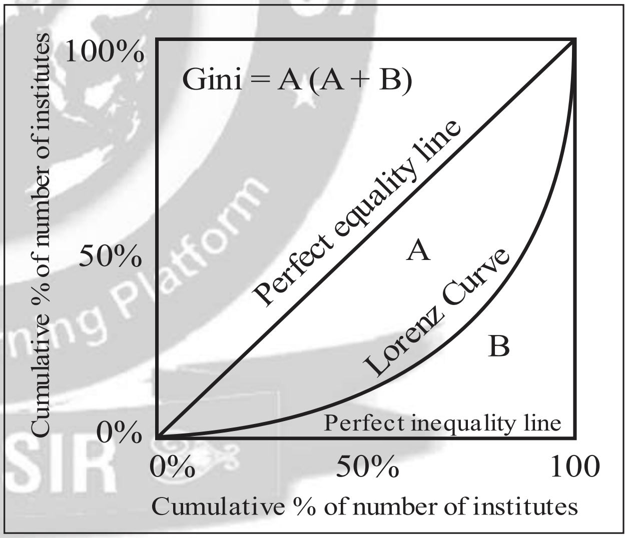

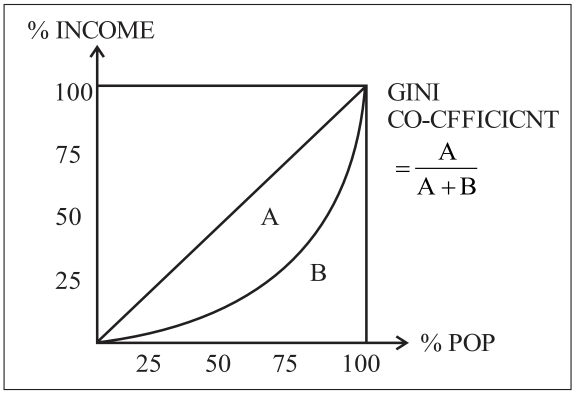

☞ भारत में योजना आयोग द्वारा बनाए गए गरीबी मापन हेतु प्रमुख समितियाँ–

समितियां	वर्ष
डॉ. वाई.के. अलघ समिति	1977
लकड़ावाला समिति	1989
सुरेश तेंदुलकर समिति	2005
सी.रंगराजन समिति	2012

बेरोजगारी (Unemployment)

☞ बेरोजगारी वह आर्थिक स्थिति है जिसमें व्यक्ति को समय पर उसके योग्यता अनुसार उचित मूल्य पर रोजगार नहीं मिलता है। बेरोजगारी के कई स्वरूप होते हैं। इससे संबंधित आंकड़े NSSO द्वारा जारी किए जाते हैं।

☞ बेरोजगारी को दर्शाने के लिए फिलिप्स वक्र का प्रयोग किया जाता है।

➢ **संरचनात्मक बेरोजगारी (Structural Unemployment)**

☞ जब मांग में परिवर्तन हो और मांग में संरचनात्मक बेरोजगारी की कमी हो जाए तो इससे उत्पन्न बेरोजगारी को संरचनात्मक बेरोजगारी कहते हैं। यह दीर्घकालीन होता है। अस्फिति (धन की कमी) के कारण यह संचालक या ढ़ाचागत बेरोजगारी उत्पन्न करती है। भारत में सबसे ज्यादा संरचनात्मक बेरोजगारी पाई जाती है।

➢ **चक्रीय बेरोजगारी (Cyclical Unemployment)**

☞ जब मांग पुरी तरह समाप्त हो जाए अर्थात समग्र मांग की अभाव में फैक्ट्री बढ़ जाए तो उससे जुड़े सभी लोग बेरोजगार होते हैं।

☞ चक्रीय बेरोजगारी मुख्यत: व्यापार चक्र से संबंधित होती है तथा यह अस्थायी प्रकृति की होती है।

Ex :– NOKIA/FACTORY → परिवहन → DEALER Distributer → Wholesaller → Retailer → उपभोक्ता

➢ **घर्षणात्मक बेरोजगारी (Frictional Unemployment)**

☞ जब तकनिकी विकास होता है तो पुराने तकनिक के लोग तब तक के लिए बेरोजगार हो जाते हैं। जब तक कि वो नई तकनिक सिख नहीं जाते हैं। अर्थात् नई नौकरी को खोजने के दौरान हुई बेरोजगारी घर्षणात्मक होती है। यह अल्पकालीन होती है। यह भारत के शहरी क्षेत्र में देखी जाती है।

➢ **छिपी बेरोजगारी/अदृश्य/प्रच्छन्द (Disguised Unemployment)**

☞ वह बेरोजगारी जिसमें मजदूर काम पर लगा हुआ तो दिखता है किंतु उसकी उत्पादकता (सिमांत उत्पादकता) शून्य होती है। अर्थात् उसे नौकरी से हटा दिया जाए तो उत्पादन में कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। कृषि क्षेत्र में यही बेरोजगारी देखी जाती है।

➢ **मौसमी बेरोजगारी (Seasonal Unemployment)**

☞ वैसी बेरोजगारी जो किसी खास मौसम में आती है मौसमी बेरोजगारी कहलाती है। भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में यह बेरोजगारी सर्वाधिक पाई जाती है।

Ex :– फसल कटाई के बाद किसान ठंडी में जुस का कार्य।

➢ **शिक्षित बेरोजगारी (Educational Unemployment)**

☞ जब किसी व्यक्ति को उसके योग्यता के आधार पर रोजगार नहीं मिलता है, तो उसे शिक्षित बेरोजगारी कहते हैं। इसमें मजदूर अपनी कुल क्षमता से कार्य नहीं करता है।

Note :– ओकून का नियम (Okun's Law)– यह नियम किसी देश की विकास दर और बेरोजगारी दर के बीच संबंध को बताता है। यह दोनों में विपरीत संबंध पाया जाता है।

❑❑❑

Note:

कर
(Tax)

- यह एक अनिवार्य भुगतान है जिसे कानूनी रूप से देना ही पड़ता है। कर उतना ही निश्चित है जितना की मृत्यु क्योंकि यह सरकार के राजस्व का मुख्य स्रोत है। कराधान का सिद्धांत एडम स्मिथ ने दिया था।

Tax के प्रकार

1. प्रगतिशील कर (Progressive Tax)
- यह आय के बढ़ने से बढ़ता जाता है और इसका प्रभाव अमीर पर ज्यादा पड़ता है। यह आय एवं सम्पत्ति के असमानता को दूर करता है।

2. प्रतिगामी कर (Regressive Tax)
- यह कम आय वालों पर अधिक Tax लगता है। यह गरीबों को अधिक प्रभावित करता है।

3. समानुपाती (Perpositional)
- वैसा कर जो आय के घटने या बढ़ने से बदलता नहीं है समानुपाती कर कहलाता है। यह गरीब तथा अमीर को समान रूप से प्रभावित करता है।

4. अधोगामी कर (Degressive Tax)
- यह कर आय के बढ़ने से प्रारम्भ में बढ़ता है। किंतु एक निश्चित सीमा पर जाकर एक समान हो जाता है। इसमें प्रारंभ में प्रगतिशील के गुण होते हैं। बाद में समानुपाती के गुण होते हैं।
- इसमें सरकार बिना कुछ दिए धन ले लेती है।

➢ **शुल्क (Fee)**
- इसमें सरकार कुछ देने के बाद धन लेती है।

➢ **करापात (Incidence of Tax)**
- जिस व्यक्ति पर tax लगाया जाता है, उसे करापात कहते हैं।

➢ **कराघात (Impact of Tax)**
- जो व्यक्ति Tax की धन राशि देता है। उसे कराघात कहते हैं।

प्रत्यक्ष कर (Direct Tax)

- वैसा कर जो जिस व्यक्ति पर लगाया जाता है, अन्तत उसी से वसूल भी किया जाता है, Direct Tax कहलाता है।
  Ex. :– आयकर, सम्पत्ति कर, निगम कर, उपहार कर, धन कर, कृषि कर आदि।

➢ **आयकर (Income Tax)**
- यह कर सीधे करदाता की भुगतान करने की क्षमता से संबंधित होता है। जिसे प्रत्येक वर्ष करदाता को अपनी आय का एक निशचित हिस्सा केन्द्र सरकार को आयकर के रूप में देना होता है।
- यह राजस्व विभाग वित्त मंत्रालय के तहत कार्य करता है।
- इसकी निगरानी के लिए PAN CARD (Permanent Account Number) दिया जाता है।

वर्तमान (Finacial Year 2024) में Income Tax के 6 Slab है–

Income Tax Slab	
0 – 3 लाख	No Tax
3 – 6 लाख	5%
6 – 9 लाख	10%
9 – 12 लाख	15%
12 – 15 लाख	20%
15 लाख ↑	30%

- Income का ब्योरा देने के लिए कम्पुटीशन बनना पड़ता है। कम्पुटीशन (Computation) के इनकम के आधार पर ही Income Tax ITR जमा करना होता है।

➢ **उपकर (Cess)**
- Tax के अतिरिक्त लगाया गया कर शेष कहलाता है। शेष की धनराशि के द्वारा सरकार प्रौढ़ शिक्षा सफाई, सामाजिक सुरक्षा, इत्यादि पर खर्च करती है।
- यह Tax के अतिरिक्त अलग से Tax लिया जाता है। जिसे Tax On Tax कहते हैं। इसे 4% तक लिया जाता है। Cess का पूरा पैसा केन्द्र सरकार के पास रहता है।

➢ **अधिभार (Sur Charge)**
- यह भी Tax पर ही लिया जाता है। इसे भी Tax On Tax कहते हैं। यह तब लिया जाता है जब कोई व्यक्ति 50 लाख से अधिक देता है। यह 10% तक लिया जाता है।

➢ **संपत्ति कर (Wealth Tax)**
- संपत्ति से अर्जित किए गए लाभ पर लगने वाले कर को संपत्ति कर कहते हैं।
- यह राज्य सरकार का कर है।

➢ **निगम कर (Corporate Tax)**
- यह बड़े-बड़े कम्पनी पर लगाया जाता है। यह प्रत्यक्ष कर है। यह मुनाफे के 30% पर लगाया जाता है। केन्द्र सरकार के आय का सबसे बड़ा स्रोत निगम कर है।
  Ex. :– Tata, बिरला, Reliance

➤ **उपहार कर (Gift Tax)**

☞ यह प्रत्यक्ष कर है। जब 50 हजार से अधिक का Gift मिलता है, तो यह Tax लगाया जाता है। यह 30% होता है।

Ex. :– K.B.C. में विजेता को 5 करोड़ में 3.5 करोड़ रुपये मिलते हैं।

Note :– विवाह में समधी द्वारा दिए गए उपहार पर यह Tax नहीं लगता है।

अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax)

☞ यह जिस व्यक्ति पर लगाया जाता है वह व्यक्ति उसका भुगतान नहीं करता बल्कि दूसरा व्यक्ति उसका भुगतान करता है। यह वस्तुओं पर लगाया जाता है। जैसे बिक्री कर, सीमा शुल्क, वाहन कर।

➤ **सीमा शुल्क (Custom Duty)**

☞ यह कर देश के सीमा से बाहर जाने वाली तथा देश में बाहर से आनेवाली वस्तुओं पर लगता है।

☞ इस कर को केंद्र सरकार द्वारा लगाया एवं एकत्रित किया जाता है जबकि वित्त आयोग की सिफारिश पर केंद्र एवं राज्य के बीच बांटा जाता है।

➤ **सेवाकर (Service Tax)**

☞ यह राज्य सरकार लेती थी। इसे 1994-95 में लाया गया।

Note :– वर्तमान में Vat तथा Service Tax को समाप्त करके GST लाया गया है।

☞ वर्ष 2003 में 88वां संविधान संशोधन द्वारा इस कर को केंद्र सूची में डाल दिया गया।

➤ **उत्पाद शुल्क (Excise Duty)**

☞ यह कर केंद्र सरकार द्वारा किसी देश के भीतर वस्तु के उत्पादन पर लगाया जाता है।

☞ मादक पेय पदार्थ जैसे शराब, तंबाकू, गांजा आदि पर राज्य सरकार द्वारा उत्पादन शुल्क लगाया जाता है किंतु तंबाकू से निर्मित वस्तु जैसे सिगरेट पर केंद्र सरकार कर लगाती है।

☞ स्थानीय सरकार के कारण इसे पंचायत एवं नगरपालिका के लोग लेते हैं।

Ex. :– मालगुजारी, भवन कर, खेती कर, चुंगीकर।

➤ **VAT (Value Added Tax)**

☞ इसको सबसे पहले फ्रांस ने अपनाया था। भारत में इसे L.K. झा समिति के सिफारिश पर लागू किया गया। यह अप्रत्यक्ष कर है। इसे बिक्री पर राज्य सरकार लेती थी।

Note :– (Central Value Added Tax (CENVET) केंद्र सरकार उत्पादन पर लेती थी। Cenvet अप्रत्यक्ष कर था। Vet Tax को सबसे पहले 2005 में हरियाणा ने माना था जबकि सबसे अंत 2008 U.P. ने माना।

वस्तु एवं सेवा कर (GST)
(Goods and Service Tax)

☞ यह एक अप्रत्यक्ष कर है। भारत का GST कनाडा मॉडल पर आधारित है। विश्व में सबसे ज्यादा GST की दर भारत में है। GST चोरी करने वाले को 5 साल जेल का प्रावधान होगा।

☞ GST पंजीकरण करने पर 15 अक्षर का पंजीकरण नम्बर दिया जाता है।

GST – Indentification Number

10 –	PYKAZ6318K	IPQ
State	PAN No.	Business

☞ GST के दायरे में 20 लाख से अधिक टर्न ओवर वाले व्यापारी को रखा गया है।

☞ GST के सभी निर्णय GST परिषद् लेती है।

☞ GST परिषद् में 33 सदस्य होते हैं।

1. वित्तमंत्री = 1 अध्यक्ष
2. राज्यमंत्री = 1
3. राज्य के वित्तमंत्री = 28
4. UT के वित्तमंत्री (दिल्ली, पांडिचेरी, जम्मूकश्मीर)= 3

Note :– GST परिषद् के अध्यक्ष वित्तमंत्री होते हैं। भारत में GST अरविन्द समिति के सिफारिश पर लागू किया गया। GST लागू करने के लिए 101वाँ संविधान संशोधन किया गया।

☞ GST की चर्चा अनु. 379 में है।

☞ IGST की चर्चा अनु. 369 में है।

☞ भारत की GST VAT को हटाकर लाया गया है।

☞ भारत में GST 1 जुलाई 2017 को लागू किया गया है।

☞ GST लागू करने वाले पहला राज्य असम था।

☞ GST आने से सेवा शुल्क, केन्द्रीय उत्पाद शुल्क समाप्त कर दिया गया।

☞ GST Monthly भरा जाता है।

☞ GST प्रत्येक महीना के 24 तारीख को भर देना होता है।

भारत में GST के चार Class बनाये गये हैं-

(i) 5% – इसमें आवश्यक वस्तु को रखा गया है।
(ii) 12 % – इसमें उपयोगी वस्तु को रखा गया है।
(iii) 18% – इसमें आरामदायक वस्तु को रखा गया है।
(iv) 28% – इसमें विलास्तापूर्ण वस्तुओं को रखा गया है।

GST को चार श्रेणी में बाँटा गया है–

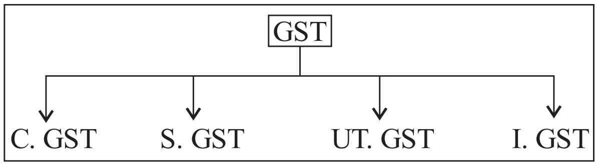

- **C.GST**
  - यह केन्द्र सरकार लेती हैं यह वस्तु के उत्पादन पर लगता है।
- **S.GST**
  - जिस राज्य में वस्तु बनी है, यदि उसी राज्य में बेची जाय तो SGST लगता है।
- **UT.GST**
  - यह केन्द्रशासित प्रदेश में बनी वस्तु केन्द्रशासित प्रदेश में ही बिकती है। उसे UT. GST कहते हैं।
- **I.GST**
  - यदि किसी राज्य में बनी वस्तु दूसरे राज्य में बेची जाती है जिस राज्य में उसे बेचा जाता है। वह राज्य IGST लेता है।
  - Online की सभी खरीदारी IGST के अंतर्गत आता है।

Note :– चार प्रकार के GST में से C.GST अनिवार्य रूप से देना ही है। शेष तीन GST में से कोई एक GST लगेगा।

Ex. :–

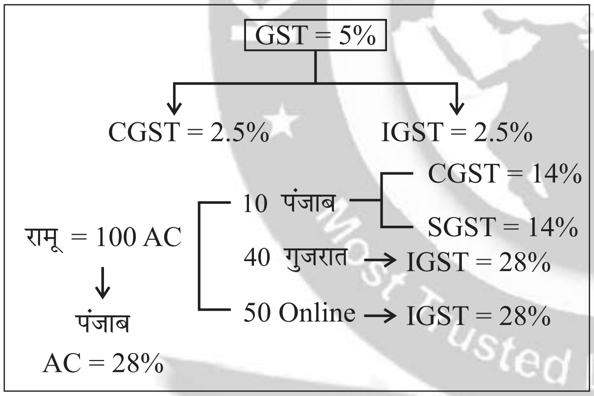

Note

1. कुछ Tax जिसे केन्द्र सरकार लगाती है तथा केन्द्र सरकार ही उपयोग करती है।
   Ex. :– निगमकर।
2. कुछ Tax केन्द्र सरकार लगाती है किन्तु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार दोनों मिलकर रख लेती हैं।
   Ex. :– उत्पादन शुल्क Income Tax।
3. कुछ Tax केन्द्र सरकार लगाती है किंतु राज्य सरकार को दे देती है।

Ex. :– कृषि कर, वहन पंजीकरण।

महत्वपूर्ण कर सुधार समिति

समितियां	कार्य क्षेत्र
राजा चेलैया समिति	कर सुधार
वाँचू समिति	प्रत्यक्ष कर
केलकर समिति	प्रत्यक्ष कर
एल.के. झा समिति	अप्रत्यक्ष कर
रेखा समिति	अप्रत्यक्ष कर
भूरेलाल समिति	मोटरवाहन में कर वृद्धि
रंगराजन समिति	पेट्रोलियम उत्पाद पर कर
वाई.वी. रेड्डी	आयकर में छूट

प्रत्यक्षकर (Direct Tax)	अप्रत्यक्ष कर (Indirect Tax)
सम्पत्ति कर (Assets Tax)	उत्पादन कर (Excise Tax)
कृषि कर (Agriculture Tax)	सेवा कर (Service Tax)
धन कर (Wealth Tax)	सीमा कर (Custam Tax)
आय कर (Income Tax)	बाजार कर (Market Tax)
निगम कर (Corporate Tax)	बिक्री कर (Sales Tax)
व्यवसाय कर (Business Tax)	मनोरंजन कर (Entertainment Tax)
भू-राजस्व कर (Land Revenue Tax)	प्रोफेशनल कर (Professinal Tax)
मृत्यु कर (Death Tax)	टोल कर (Toll Tax)
उपहार कर (Gift Tax)	स्टाम्प कर (Stamp Tax)

❑❑❑

Note:

व्यापार संतुलन
(Trade Balance)

☞ कई देशों के बीच जब व्यापार होता है, तो आयात-निर्यात के अंतर को व्यापार संतुलन कहते हैं। यदि यह धनात्मक है तो देश के लिए अच्छा होता है।

Q. भारत चीन को 18 अरब डालर (वार्षिक) का निर्यात करता है। जब कि चीन से 72 अरब डॉलर का आयात करता है। तो भारत का व्यापार संतुलन ज्ञात करें।

निर्यात – आयात

18 – 72 = 54 अरब डॉलर (ऋणात्मक व्यापार संतुलन)

भुगतान संतुलन (Balance of Payment)

भुगतान संतुलन (Balance of Payment)

- चालू खाता (Current Account)
  - (A) दृश्य मद
  - (B) अदृश्य मद
  - (C) एक पक्षीय भुगतान
- पूंजी खाता (Capital Account)
  - (A) ऋण (Loan)
  - (B) निवेश (Invest)
    - FDI विदेशी (Foreign Direct Investment) प्रत्यक्ष विदेशी निवेश
    - FPI (Foreign Portfolio Investment) विदेशी पोर्टफोलियो निवेश
    - FII (Foreign Institutional Investment) विदेशी निवेश संस्था

चालू खाता (Current Account)

☞ यह दृश्यमान (दृश्य मद) और अदृश्यमान (अदृश्यमद) वस्तुओं के आयात-निर्यात को दर्शाता है।

A. दृश्यमद (Visual Item):– इसमें सभी प्रकार की भौतिक वस्तुओं (Goods) का आयात एवं निर्यात सम्मिलित होता है।

B. अदृश्य मद (Invisible Item) :– इसमें विभिन्न देशों के बीच होने वाली सेवाओं (Services) शामिल होते हैं।

C. एक पक्षीय भुगतान :- इसमें किसी स्रोत से प्राप्त अनुदान व उपहार (Gift) को शामल किया जाता है।

पूंजी खाता (Capital Account)

☞ यह मुख्य रूप से किसी देश द्वारा एक वर्ष के दौरान विदेशी संपत्तियों और देनदारियों के व्यापार से संबंधित है।

☞ विदेशी निवेश तथा ऋण इसके मुख्य घटक है।

➢ **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश FDI (Foreign Direct Investment)**

☞ जब कोई विदेशी कम्पनी या संस्था भारत में किसी कम्पनी की 10% से अधिक की हिस्सेदारी खरीद लेती है और अपने कम्पनी का कोई भी Branch लगाती है तो उसे FDI कहते हैं।

➢ **विदेशी पोर्टफोलियो निवेश FPI (Foreign Portfolio Investment)**

☞ जब कोई विदेशी कम्पनी भारत में 10% से कम निवेश करती है तो उसे FPI कहते है।

➢ **विदेशी निवेश संस्था FII (Foreign Institutional Investment)**

☞ वैसी संस्था तथा Bank जो FDI तथा FPI में मदद करते है उसे FII कहते है।

रिजर्व बैंक ऑफ इण्डिया
RBI (RESERVE BANK OF INDIA)

☞ इसका गठन 1934 में गठित समिति हिल्टन यंग के सिफारिश पर 1 April, 1935 को किया गया। हिल्टन यंग आयोग ने इसे केन्द्रीय बैंक का दर्जा दिया। इसके पहले अध्यक्ष ओसबर्न स्मिथ थे तथा इसके पहले भारतीय अध्यक्ष C.D देशमुख थे। वर्तमान गर्वनर शक्तिकांत दास हैं।

- ☞ RBI की स्थापना 100, 100 के 5 लाख शेयर को मिलाकर हुई थी किन्तु 1 January, 1949 को सरकार ने इसका राष्ट्रीयकरण कर दिया।

इसका मुख्यालय मुम्बई है जबकि चार क्षेत्रीय कार्यालय है– Delhi, Mumbai, Chennai, Kolkatta.

- ☞ इसका विदेश में कार्यालय लंदन में है। RBI प्रत्येक राज्य के वित्तीय लेनदेन को देखती है। किंतु जम्मूकश्मीर के लेनदेन को SBI देखती है।
- ☞ RBI का लेखा वर्ष 1 July से 30 जून तक होता है। RBI के कार्यों का संचालन 21 सदस्यों वाले बोर्ड सदस्य द्वारा होता है।

1 = गर्वनर
4 = Deputy गर्वनर
4 = क्षेत्रीय ब्रांच के गर्वनर (अध्यक्ष)
2 = वित्त मंत्रालय के अधिकारी
10 = अर्थशास्त्र के अच्छे जानकार

➢ RBI के कार्य

(i) सरकारी बैंकर के रूप में कार्य।
(ii) अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भारत का प्रतिनिधित्व करना।
(iii) आर्थिक आकरे जारी करना।
(iv) मुद्रा का विनिमय (Exchange)
(v) बैंकों पर नियंत्रण रखना।
(vi) साख नियंत्रण
(vii) नोट का निर्गमन
(viii) विदेशी मुद्रा भंडार का संरक्षण

➢ साख नियंत्रण (Greadit Control)

- ☞ बाजार की तरलता को नियंत्रित करना साख नियंत्रण कहलाता है। इसके लिए RBI मौद्रिक नीति को अपनाती है। मौद्रिक नीति के अंतर्गत M.S.F, Reporate, Bank Rate, CRR, SLR, खुले बाजार की नीति (प्रतिभूति की बिक्री)आदि आते हैं।
- ☞ RBI का कार्य साख सृजन करना नहीं होता है बल्कि साख नियंत्रण होता है।
- ☞ साख सृजन का कार्य व्यापारिक बैंक करते हैं।

➢ मौद्रिक नीति (Monetary Policy)

- ☞ अर्थव्यवस्था में मुद्रा की आपूर्ति एवं ब्याज दर को प्रभावित करने वाले नीतियां को ही मौद्रिक नीति कहा जाता है।
- ☞ इसका संचालन केंद्रीय बैंक अर्थात् RBI करता है।
- ☞ इस नीति की घोषणा एक वित्तीय वर्ष में 2014 के बाद 6 बार अर्थात् द्विमासिक की जाती है।

➢ मौद्रिक नीति के लक्ष्य

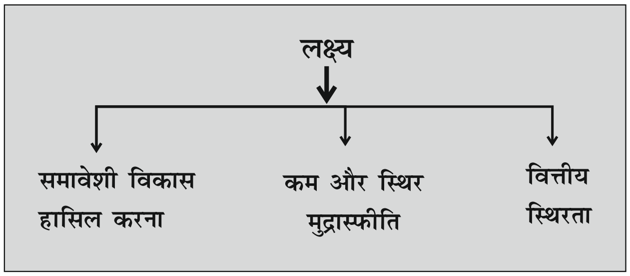

➢ बैंक दर (Bank Rate)

- ☞ RBI Bank को 14 दिन से अधिक के लिए (दीर्घकालिक) जिस ब्याज दर पर ऋण देती है उसे Bank Rate कहते हैं। MSF > Reporate > Bank rate
- ☞ अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति को रोकने के लिए बैंक दर को बढ़ाया जाता है। जबकि मुद्रा अवस्फीति का सामना करने के लिए बैंक दर को कम किया जाता है।

➢ रेपो दर (Repo Rate)

- ☞ RBI बैंकों को 2 से 14 दिन के लिए जिस दर पर ऋण देती है उसे Repo Rate कहते हैं। यह लगभग 4% तक है।
- ☞ इसका प्रयोग RBI के द्वारा अर्थव्यवस्था में तरलता में वृद्धि के लिए किया जाता है।

➢ MSF (Marginal Standing Facility)

- ☞ RBI बैंकों को एक दिन के लिए जिस ब्याज दर पर ऋण देती है उसे MSF कहते हैं।

➢ रिवर्स रेपो दर (Reverse Repo Rate)

- ☞ जब बैंक अपना अतिरिक्त धन RBI के पास रखते हैं, तो RBI द्वारा दिया गया ब्याज दर Reverse Reporate कहलाता है।

➢ नगद आरक्षित अनुपात CRR (Cash Reserve Ratio)

- ☞ बैंकों को अपने कुल जमा का 4% RBI के पास रखना होता है। जिस पर RBI कोई भी ब्याज नहीं देती है। इसे ही नगद आरक्षित अनुपात कहते हैं।
- ☞ अर्थव्यवस्था में मुद्रा की पूर्ति को नियंत्रित करने के लिए इसमें समय-समय पर परिवर्तन किया जाता है।
- ☞ अत्यधिक मुद्रा स्फीति के समय RBI नगद आरक्षित अनुपात CRR को बढ़ा देता है।

➢ वैधानिक तरलता अनुपात SLR (Statutory liquidity Ratio)

- ☞ बैंक को अपने कुल जमा का 18% पैसा अपने पास रखना पड़ता है जिसे SLR कहते हैं।

➢ PLR (Primary Landing Rate)

- ☞ बैंक ग्राहकों को जिस दर पर ब्याज देती है उसे PLR कहते हैं।

➢ Base Rate

- ☞ बैंक अपने चुनिंदा ग्राहक को न्यूनतम ब्याज दर पर ऋण देती है। Base Rate कहते हैं।